JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च शिक्षा के प्रति युवा वर्ग का दृष्टिकोण

डॉ. सीमा शर्मा [1]

1. प्राचार्य, शासकीय सी एम राईज विद्यालय, पाटनदेव, रायसेन (म. प्र.)

महाविद्यालयिन युवा वर्तमान शिक्षा प्रणाली के आधार भूत स्तम्भ एवं केन्द्र विन्दु है । तथापि उच्च शिक्षा नीति निर्माण में उनके विचारों एवं अभिवृत्तियों को कठिनता से दृष्टिगत रखा जाता है। स्वतन्त्रोत्तर काल में शिक्षा के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करने एवं सिफारिश करने के लिये राधा कृष्णनन आयोग 1948-49 मुदालियर आयोग 1953 कोठारी आयोग 1964-65 आदि का गठन किया गया परन्तु किसी भी आयोग ने युवा विचारधारा का अध्ययन नहीं किया गया । कोठारी आयोग ने शिक्षा के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करने के लिये 12 उपसमीतियों का निर्माण किया परन्तु किसी भी समीति ने युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व देना तो दूर रहा उनके विचारों ओर सुझावों को भी कोई महत्व नहीं दिया गया । उच्च शिक्षा का मूल सम्बन्ध विद्यार्थी से है न कि योजना निर्माता से । परन्तु खेद की बात है कि वही उपेक्षित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च शिक्षा के प्रति युवा वर्ग की अभिवृत्ति व शिक्षा व्यवस्था के प्रति उनकी प्रतिक्रिया को जानने का प्रयास किया गया । हमारा यह अध्ययन इस मान्यता पर अधरित है कि शिक्षा केवल रोजगार प्राप्त करने का ही माध्यम नही, बल्कि चारित्रिक विकास और व्यक्तित्व निर्माण का भी सशक्त साधन है, पर उच्च शिक्षा के प्रति युवा वर्ग की अभिवृत्ति नकारात्मक है।

उच्च शिक्षा के स्वरूप के प्रति युवा वर्ग का दृष्टिकोण से सम्बन्धित यह प्रपत्र मेरे द्वारा किये गये एक शोध अध्ययन पर आधारित है जो ग्वालियर नगर में सम्पादित किया गया । ग्वालियर नगर के विभिन्न 7 महाविद्यालयों में से दो बड़े महाविद्यालय शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय और शासकीय एम एल बी कालेज को चुना गया । इन दोनो महाविद्यालयों मे 2021-22 मे स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययनरत और जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर में इस सत्र में पी एच डी कार्य में पंजीकृत कुल विद्यार्थियों और शोधार्थियों की संख्या ज्ञात की गयी जो 2300 थी । तत्पश्चात दोनो महाविद्यालयों के सभी विभागों के विभागाध्यक्षों से सम्र्पक कर उनके विभाग में स्नातकोत्तर स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु बनाये गये वाटस एप और विश्वविद्यालय में शोध कार्य में पंजीकृत विद्यार्थियों के परीक्षा नोडल अधिकरी से उनके लिये बने हुए वाट्स एप ग्रुप का उपयोग किया गया । तथ्य संकलन हेतु एक संरचित प्रश्नवली का निर्माण किया गया और उसे गूगल फार्म के द्वारा आनलाईन माध्यम से वाटस एप ग्रुप में उन सभी विद्यार्थियों को प्रश्नावली शेयर कर दिया गया और विद्यार्थियों से यह निवेदन किया गया कि प्रश्नावली मे दिये गये प्रश्नों का उत्तर गम्भीरता से देते हुए गूगल फार्म में भरकर सबमीट कर दे । इस प्रकार तथ्यों का संकलन आन लाईन माध्यम से किया गया । इसमें केवल 126 विद्यार्थियों ने सहभागिता की और अपना प्रतिउत्तर शोधकर्ता के पास भेजा।

तथ्यों का संकलन के लिये जिस प्रश्नावली का निर्माण किया गया, उसमें प्रतिवन्धित व अप्रतिवन्धित दोनो प्रकार के प्रश्न रखे गये। विद्यार्थियों से शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, प्राध्यापको के प्रति उनका दृष्टिकोण व वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के प्रति उनकी प्रतिक्रिया जानी गयी। तथ्यों का विश्लेषण के लिये सांख्यकी विधि को उपयोग में लाया गया और उपकल्पना का परीक्षण काई वर्ग के माध्यम से किया गया।

शिक्षा के उद्देश्य व युवा वर्ग-

प्रत्येक समाज के अपने मूल्य आदर्श एवं विचारधारायें होती है और इसी के अनुरूप शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित होते है । शिक्षा के कुछ उद्देश्य और भूमिका तो सार्वभौम होते है तो कुछ सामाजिक आवश्यकताओं एतिहासिक प्रक्रियाओं व सामाजिक अनुभवों के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित होते है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानवीय व्यक्तित्व व चरित्र का विकास, सामाजिक विकास और सामाजिक मूल्यों का व्यक्तित्व में आन्तरीकरण एवं उच्चतम योग्यता और निपुणता को बढाना है और उसका मुख्य कार्य समाज के मूल्यों को सरक्षित करना व समयानुसार वर्तमान मूल्यों को परिवर्तित करना है । शिक्षा मूल्य संरक्षण व हस्तान्तरण का एक सशक्त साधन है। यह व्यक्ति के सोचने समझने विचार करने

व मान्यताओं को स्थापित करने में अमूल्य योगदान देता है । इसके माध्यम से न केवल सामाजिक प्रस्थिति का निर्धारण होता है बल्कि उर्ध्व गतिशीलता का भी निर्धारण होता है। इस सन्दर्भ में उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि आप की दृष्टि में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य क्या है ? प्राप्त उत्तरों को हम निम्न सारणी में रख रहे है –

सारणी 1- शिक्षा के उद्देश्य व कालेज युवा

शैक्षणि स्तर	मनवीय व्यक्तित्व व विकास	परीक्षा उर्त्तीण कराना और उपाधी प्रदान करना	ज्ञान वर्धन और विकास	योग
स्नातकोत्तर स्तर	12 (16.0%)	60 (80.0%)	3 (4.0%)	75 (100%)
पी एच डी शोधार्थी	23 (45.1%)	21 (41.2%)	7 (13.7%)	51 (100%)
योग	35 (27.8%)	81 (64.3%)	10 (7.9%)	126 (100%)

उक्त सारणी में प्राप्त तथ्यों को देखे तो पाते है कि हमारे सर्वाधिक 64.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं की दृष्टि में केवल परीक्षा उत्तीर्ण कराकर उपाधी प्रदान करने का कार्य कर रही है जब कि शिक्षा का उद्देश्य रोजगार के अवसर को उपलब्ध कराना था । विद्यार्थियों की मांग है कि उन्हें उपाधी नही रोजगार चाहिये । ऐसा मानने वाले उत्तर दाताओं में स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों की संख्या सर्वाधिक है। हलांकि हमारे एक चौथाई से अधिक 27.8 प्रतिशत उत्तरदाता मानवीय क्तित्व का निर्माण करने व चारित्रिक विकास केलिये उपयोगी मानते है । इससे सामाजिक मूल्यों का व्यक्तित्व में आन्तरीकरण होगा । ऐसा मानने वाले उत्तरदाताओं में शोधार्थियों की संख्या सर्वाधिक है। हमारे उत्तरदाताओं का एक न्यूनतम भाग 7.9 प्रतिशत उत्तरदाता ज्ञानवर्धक व बौद्धिक स्तर को उच्च करने वाला मानते है। इस प्रकार प्राप्त तथ्य यह स्पष्ट करते है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली उद्देश्यहीन होती जा रही है जो केवल परीक्ष उत्तीर्ण कराकर उपाधी प्रदान करने का कार्य कर रही है। इसी प्रकार के निष्कर्ष माधुरी सक्सेना और पी सी जैन (1985) ने अपने अध्ययन में दिया है। उन्होनें अपने अध्ययन में पाया कि वर्तमान शिक्षा न केवल अपने उद्देश्य में वरन विद्यार्थियों को अपने मंजिल तक पहुँचने में सहयोग नही देती । यह अपनी स्तरीय मूल्य व उपयोगिता खो चुकी है।

उक्त तथ्यों का विश्लेषण में काई वर्ग का परीक्षण किया गया और पाया गया कि काई वर्ग का गणनात्मक मान, सारणी मान से अधिक है जो यह प्रदर्शित करता है कि उत्तरदाताओं के शैक्षणिक स्तर और शिक्षा के उद्देश्य में कोई सार्थक सम्बन्ध नही है । अतेव बनायी गयी उपकल्पना यहां निरस्त की जाती है ।

शिक्षा के प्रेरक तत्व व युवा वर्ग-

प्रौद्यौगिकीय विकास की ओर अग्रसित समाजों मे सदस्यों को उच्चतम योग्यता व निपुणता को बनाये रखना श्रम शक्ति की सुलभता को बनाये रखना व उत्पादन सम्बन्धों को समायोजित रखने की प्राथमिक आवश्यकता है। रोजगार प्राप्त कर आजीविका में सुधार लाने सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार करने उर्ध्व गतिशीलता को बनाये रखने व आत्मनिर्भर को बनाये रखने के लिये शिक्षा की महत्ता को स्वीकार किया गया । इस सन्दर्भ में उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि आप किस उद्देश्य से प्रेरित हो कर शिक्षा ग्रहण कर रहे है । प्राप्त उत्तरो को हम निम्न सारणी में रख रहे है|

सारणी 2- शिक्षा के प्रेरक तत्व व युवा वर्ग

शैक्षणि स्तर	समाजिक प्रस्थिति में सुधार और बौधिक स्तर को उचा करने के लिये	केवल उपाधी प्राप्त करने के लिये	केवल रोजगार नौकरी प्राप्त करने के लिये	योग
स्नातकोत्तर स्तर	7 (9.3%)	26 (34.7%)	42 (56.0%)	75 (100%)
पी एच डी शोधार्थी	12 (23.5%)	3 (5.9%)	36 (70.6%)	51 (100%)
योग	19 (15.1%)	29 (23.0%)	78 (61.9%)	126 (100%)

उक्त सारणी में प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हमारे सर्वाधिक 619 प्रतिशत उत्तरदाता केवल रोजगार प्राप्त करने के उद्देश्य से शिक्षा ग्रहण कर रहे है जिससे उनके आर्थिक स्तर में सुधार हो सके और वे आत्मनिर्भर बन सके । ऐसा मानने वालो में दोनो स्तर के विद्यार्थी सम्मलित है। उत्तरदाताओं का लगभग एक चौथाई भाग 23 प्रतिशत केवल उपाधी प्राप्त करने के लिये शिक्षा ग्रहण कर रहे है। इसमें स्नातकोत्तर

स्तर के विद्यार्थी सर्वाधिक है। पर उत्तर दाताओं का एक न्यूनतम भाग 15 प्रतिशत अपनी सामाजिक प्रस्थिति को सुधार करने व बौद्धिक स्तर को उचा करने के लिये शिक्षा ग्रहण कर रहे है। इसमें भी शोधार्थियों की संख्या अधिक है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि रोजगार प्राप्त कर आजीविका चलाने व आत्मनिर्भर बनने के लिये शिक्षा ग्रहण करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या सर्वाधिक है।

यहां भी काई वर्ग का परीक्षण किया गया और पाया कि काई वर्ग का मान सारणी मान से अधिक है । इसलिये उत्तरदाताओं के शैक्षणिक स्तर और शिक्षा के प्रेरक तत्व में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है। अतेव यहां भी बनायी गयी उपकल्पना निरस्त की जाती है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली और युवा वर्ग

नीतिगत विषयों पर विचार निर्माण की प्रक्रिया में व्यक्ति विशेष की क्षमता व योग्यता का महत्वपूर्ण स्थान होता है । वैचारिकी का आधार व्यक्ति द्वारा अर्जित ज्ञान व शिक्षा है। इससे व्यक्ति को सामाजिक संरचना में एक निश्चित प्रस्थिति प्राप्त होती है और प्रस्थिति सूचक प्रतीको के निर्माण में सहयोग करती है। इस सन्दर्भ में सूचनादाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि जिन उद्देश्यों को लेकर वे शिक्षा ग्रहण कर रहे है, क्या वर्तमान शिक्षा प्रणाली उसे पूरा करने में सहायक है ? प्राप्त उत्तरो को हम निम्न सारणी में रख रहे है -

सारणी-3 वर्तमान शिक्षा प्रणाली और युवा वर्ग

शैक्षणिक स्तर	हॉ	नही	योग
स्नातकोत्तर स्तर	6 (8.0%)	69 (92.0%)	75 (100%)
पी एच डी शोधार्थी	21 (41.2%)	30 (58.0%)	51 (100%)
योग	27 (21.4%)	99 (78.6%)	126 (100%)

उक्त सारणी में प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण करे तो पाते है कि शिक्षा प्राप्ति के उपरान्त जीवन के प्रति जो लक्ष्य विद्यार्थियों के मस्तिष्क में है, वे वर्तमान शिक्षा प्रणाली से पुरे नहीं हो पा रहे है। हमारे सर्वाधिक 78.6 प्रतिशत उत्तरदाता मानते है कि कालेजीय शिक्षा उददेश्यहीन होती जा रही है और यह केवल परीक्षा उतीर्ण कराकर उपाधी प्रदान करने वाली बन गयी है। वे यह भी मानते है कि वर्तमान शिक्षा विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सहयोग नही दे रही है। उन्हाने यह आकंक्षा व्यक्त की कि उन्हे उपाधी नही, रोजगार चाहिये । सूचनादाताओं ने यह बताया कि जब दूसरी नयी शिक्षा नीति 1986 में लागू की गयी तब हमारे देश के युवा प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी जी ने रोजगार और उपाधी को अलग करने की नीति अपनाये जाने की बात की थी। पर आज 35 वर्ष के बाद भी शिक्षा प्रणाली इस योग्य नहीं बन पायी कि रोजगार के अवसर उपलब्ध करा सके । हमारे सूचनादाता इस बात से संशकित है कि सरकार दोनो चीजो को ही न बन्द कर दे । कही ऐसी नीति न बन जाये कि न तो आप रोजगार मांगिये और न ही उपाधी । यह हमारी शिक्षा प्रणाली के लिये गम्भीर चुनौती है।

हालांकि 21 4 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते है कि यदि युवा विद्यार्थी अध्ययन को गम्भीरता से ले और अपने कैरियर पर ठीक से फोकस करे तो उन्हें रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होगे । विभिन्न प्रकार के बहुराष्ट्रीय कम्पनियां एम एन सी, आई टी सेक्टर मैनेजमेण्ट के क्षेत्र में, टूरिज्म विभाग, वैकिंग सेक्टर, स्कूली शिक्षा और स्वास्थ्य विभाग ऐसे क्षेत्र है जहां पर रोजगार के भरपूर अवसर उपलब्ध है। ऐसा मानने वाले शोधार्थियों की संख्या सर्वाधिक है। इन विद्यार्थियों की नजर में नयी शिक्षा नीति जो 2020 में लागू की गयी है उसमें सभी विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का परवाह किये बिना उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक समान पहुॅच वाली होगी क्योंकि इस शिक्षा नीति में रचनात्मक सोच, तार्किक निर्णय व नवचार की भावना को प्रोत्साहित करने पर बल दिया गया है।

यहां पर भी काई वर्ग का परीक्षण किया गया और पाया कि शैक्षणिक स्तर और वर्तमान शिक्षा प्रणाली के बीच सार्थक सम्बन्ध नही है क्योंकि काई वर्ग का मान सारणी मान से अधिक है । इसलिये यहा पर भी उपकल्पना निरस्त होती है।

पाठ्यक्रम और युवा वर्ग-

शिक्षा के आन्तरिक संरचना में पाठ्यक्रम का स्थान महत्वपूर्ण है। हर प्रकार की शिक्षा का एक पाठ्यक्रम होता है जिसको पूरा करने के लिये एक निश्चित अवधि होती है। हमने युवा वर्ग से उनके द्वारा अध्ययन किये जा रहे पाठ्यक्रमों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया जानने की कोशिश

की। इस हेतु शोधकर्ता ने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित कुछ अनुकूल और कुछ प्रतिकूल कथनों को रखा और उस पर उनकी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिये कहा गया । प्राप्त प्रतिक्रियाओं को निम्न सारणी में रखा जा रहा है।

सारणी-4 पाठ्यक्रम के प्रति युवा वर्ग की प्रतिक्रिया-

कथन	सहमत	असहमत	तटस्थ	योग
वर्तमान परिस्थिति में पाठ्यक्रम वयवहारिक एवं उपयोगी है	7 (5.5%)	113 (89.7%)	6 (4.8%)	126 (100%)
पाठ्यक्रम भावी जीवन से संबंधित नहीं	27 (21.4%)	90 (71.4%)	9 (7.2%)	126 (100%)
वर्तमान शिक्षा पाठ्यक्रम f विधार्थियों के अनुरूप नही है।	115 (91.3%)	5 (3.9%)	6 (4.8%)	126 (100%)
पाठ्क्रम केवल परीक्षा उत्तीर्ण कराकर उपाधी प्रदान करने वाला है	108 (85.7%)	12 (9.5%)	6 (4.8%)	126 (100%)
वर्तमान शिक्षा प्रणाली विधार्थियों में अध्ययन के प्रति न तो रूचि पैदा कर रही है और न ही राष्टीय समस्याओं के प्रति जागरूकता पैदा कर रही है।	103 (81.7%)	17 (13.5%)	6 (4.8%)	126 (100%)

कालेजीय शैक्षणिक विषयों के सम्बन्ध में प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सूचनादाताओं ने बताया कि वर्तमान परिस्थिति में शिक्षा एवं पाठ्यक्रम अव्यवहारिक, अनुपयोगी एवं भावी जीवन से असम्बद्ध है। साथ ही कालेजीय शिक्षा असंगत, परीक्षा उत्तीर्ण कर उपाधी प्रदान करने, बेरोजगारी में वृद्धि और समय की वर्वादी करने वाली, अपव्यय और अवरोधन को बढ़ाने वाली है जो विद्यार्थियों के अनुरूप नही है। यहां तक कि इस प्रणाली ने इन्जीनियरिंग और मेडिकल स्नातकोत्तरों में भी भयानक बेरोजगारी का सिलसिला आरम्भ करा दिया है। वर्तमान क्षिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को अध्ययन के प्रति न तो रूचि पैदा कर रही है और न ही राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति जागरूकता पैदा कर रही है। इस प्रकार हम पाते है कि सूचनादाताओं की शिक्षा और पाठ्यक्रम के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति है।

प्राध्यापक और युवा वर्ग-

महाविद्यालय एक सामाजिक इकाई है जिसका युवा वर्ग के सामाजीकरण में अमूल्य भूमिका है। शिक्षक, छात्र और महाविद्यालय एक त्रिपक्षीय संरचनात्मक संगठन है जिसमें प्राध्यापक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस प्रकार विद्यार्थियों के चर्तुमुखी विकास में शिक्षकों की भूमिका अमूल्य है । वह विद्यार्थियों का अच्छा मित्र, दार्शनिक और भावी पीढी का निर्माता है।

1 इसके विपरीत अपने आप में आश्चर्य चकित करने वाला तथ्य सामने आया, वह यह कि हमारे अधिकांश उत्तरदाता अपने शिक्षको को रूढिवादी, लकीर का फकीर एवं अव्यवहारिक बताया सूचनादाताओं ने यह बताया कि आज के हमारे शिक्षक नवीन खोजो व नवीन अध्ययन से अवगत नही है। वे केवल कक्षा में रटी रटाई बात बता कर अपना पल्ला झाड ले रहे है। बहुत कम ऐसे शिक्षक ऐसे है जो विद्यार्थियों के विकास रूचि रखते है । सर्वाधिक 89 **प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने शिक्षको के कार्य एवं पात्रता को लेकर नकारात्मक विचार व्यक्त किये है।**

विश्वविद्यालय और कालेजीय शिक्षा के प्रति सन्तुष्टि – असन्तुष्टि-

निसन्देह भारतीय शिक्षा प्रणाली में पर्याप्त वृद्धि हुई है, पर शिक्षा के ढांचे में कोई मूलभूत परिवर्तन नही हुआ । बहुत कुछ उपलब्धियां हासिल हुई, मगर ढेर सारी असफलतायें भी हाथ लगी । असंगत एवं अनुत्पादक शिक्षा, समय की भारी वर्वादी ठीहराव, साधनों की अल्पता, शिक्षा का असमान वितरण, शिक्षण संस्थाओं में धनिको का प्रवेष, असमान पाठ्यक्रम व बेरोजगारी में वृद्धि उच्च शिक्षा के समक्ष गम्भीर चुनौतियां है। इन चुनौतियों के बावजूद विद्यार्थियों का प्रवेष शिक्षण संस्थाओं में आरोही कम में वृद्धि हो रही है। साथ ही विश्वविद्यालय और कालेजों की संख्या दिनप्रतिदिन बढती जा रही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले देश में कुल 14 विश्वविद्यालय थे तब शिक्षा का स्तर इतना गिरा नही था, पर आज ये संख्या बढ़कर 1113 से अधिक हो गये तथा महाविद्यालयों की संख्या 43796 हो गयी । 2020-21 में 70 विश्वविद्यालय और 1453 कालेज नये खुले है। पिछले पांच साल के दौरान सर्वाधिक 26 विश्वविद्यालय अकेले मध्यप्रदेश में खुले है । हमारी उच्च शिक्षा को लेकर चिन्ताजनक तस्वीर सामाने आयी है। देश के कुल 1113 विश्वविद्यालयों में से 695 और 43796 कालेजों में से 34734 को नैक से मान्यता प्राप्त नही है। इसका मतलब यह हुआ कि देश के 62 प्रतिशत विश्वविद्यालय और 78 प्रतिशत कालेज तय मानको पर खरे नही है । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उच्च शिक्षा में सुधार के लिये नैक के मानदण्डो पर खरा उतरना

अनिवार्य बनाया है। दूसरी तरफ शिक्षा का स्तर बढ़ने के बजाय दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है । सूचनादाताओं का मानना है कि शिक्षा का प्रसार नहीं, विस्फोट हुआ है। तीन चौथाई से अधिक विद्यार्थियो का मानान है कि शिक्षा का स्तर गिरा है। हालांकि कुछ छात्र मानते है कि पाठ्यक्रम पहले की अपेक्षा उच्च स्तरीय हुआ है पर उसका समुचित लाभ विद्यार्थियों को नहीं मिला है। सम्पूर्ण रूप से कालेजीय शिक्षा क प्रति विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया बहुत कम सन्तोषजनक है। कालेजीय शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण के साथ उनके जीवन लक्ष्यों का निर्धारित करने व तैयार करने में अक्षम है।

समग्र मूल्यांकन, निष्कर्ष और सुझाव

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में उच्च शिक्षा के प्रति युवा वर्ग के दृष्टिकोण एवं शिक्षा के प्रति उनकी प्रतिक्रिया से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण किया गया । यह विश्लेषण शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षकों के प्रति उनका अभिमत एवं विश्वविद्यालय और कालेज के प्रति उनकी सन्तुष्टि या असन्तुष्टि पर केन्द्रित है।

अध्ययन में सम्मलित 64 3 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते है कि वर्तमान शिक्षा प्रणली उद्देश्यहीन हो गयी है। यह अपना स्तरीय मूल्य खो रही है। शिक्षा के व्यवहारिक पक्ष और कालेजी शिक्षा के बीच एक खाई बनती जा रही है जो शिक्षा व्यवस्था को चौपट कर रही है। इसके लिये आवश्यक है कि शिक्षा को व्यवहारिक बनाने के साथ साथ जीवनोपयोगी बनाया जाये ।

सूचनादाताओं की दृष्टि में कालेज के शैक्षणिक विषय के पाठ्यक्रम जीवनेपयोगी कम सैद्धान्तिक अधिक है जो विद्यार्थियों के लिये किसी भी प्रकार से उपयोगी साबित नहीं हो पा रहा है। सैद्धान्तिक विषयों का उपयोग केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने तक ही सीमित है । अत वे ही विषय पढाये जाये जो आर्थिक विकास व समाज के आधुनिकीकरण के लिये आवश्यक है तथा जीवनोपयोगी हो ।

सूचनादाताओं का अपने शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति नकारात्मक है। वे यह मानते है कि हमारे शिक्षक विद्यार्थियों के विकास में रूची नही रखते है। कुछ ने तो यहां तक बताया कि केवल थोडे ही शिक्षक शिक्षा में बने रहने के पात्र है ।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली के प्रति विद्यार्थियों में असन्तोष बढ़ता जा रहा है। इसका मुख्य कारण असमान व उदार शिक्षा, व्यवसाय का अभाव तथा बेरोजगारी में वृद्धि आदि मुख्य है । इसके लिये आवश्यक है कि-

1. शिक्षा को व्यवहारिक बनाने के साथ साथ जीवनोपयोगी बनाया जाये ।
2. रोजगार और उपाधी को अलग करने की नीति बनायी जाये ।
3. शिक्षा को रोजगारपरक बनाया जाये ।
4. शिक्षण संस्थाओं में धनिक वर्ग के प्रवेष को रोका जाये ।
5. उच्च शिक्षा को खुली शिक्षा बनाया जाये ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. थर्सटीन वेवलन 1918 द हायर लर्निंग इन अमेरीका, न्यूयाकं ।
2. इमाइल दुर्खीम एजुकेशन एण्ड सोशियोलाजी, पेरिस ।
3. मैक्स वेबर थ्योरी आफ सोशल एण्ड इकोनोमिक आर्गनाईजेशन, द फ्री प्रेस ग्लेनको।
4. वी गार्डन चाइल्ड 1956 सोसायटी एण्ड नालेज, लन्दन
5. शोभारानी वसु 1957 फारेस्ट यूनिवर्सिटी आफ एनसियेन्ट इण्डिया, लन्दन ।
6. डी पी मुखर्जी 1957 डाइवर्सिटीज, बम्बई । लागंमैन ।
7. सुनन्दा पटवर्धन 1973 चेन्जिगं अमांग इण्डियन हरिजन आफ महाराष्ट्र, ओरियेन्ट लागंमैन ।
8. सक्सेना एवं जैन 1.985 उच्च शिक्षा का स्वरूप, सामाजिकी, उ प्र समाज शास्त्र परिषद, वाराणसी।
9. सत्यमित्र दुवे 1989 समाज शास्त्र एक परिचय, नयी दिल्ली ।
10. अरूण उपाध्याय 2005 महिला सशक्तिकरण व राष्ट्र निर्माण में शिक्षा की भूमिका, लोकतन्त्र समीक्षा, नयी दिल्ली ।